

डॉ. डेव मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट साहित्य, व्याख्यान 36, रहस्योद्घाटन 1 पर पूर्व शाप

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं, व्याख्यान 36, रहस्योद्घाटन पर उनका भ्रमण, सत्र संख्या एक।

आज हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को देखकर शुरुआत करना चाहते हैं, जो न्यू टेस्टामेंट की सबसे आखिरी किताब है। और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक दुभाषिया और पाठक के लिए कई चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है, मुख्य रूप से क्योंकि हमारे पास वास्तव में रहस्योद्घाटन क्या है, इसकी कोई आधुनिक उपमाएँ या करीबी उपमाएँ नहीं हैं। हममें से अधिकांश लोग पत्र लिखने और पढ़ने तथा आख्यान लिखने या पढ़ने से परिचित हैं।

और हम कहानियों और वे कैसे काम करती हैं तथा कविता से परिचित हैं। लेकिन जब रहस्योद्घाटन की पुस्तक की बात आती है, तो वास्तव में हमारे पास इसकी तुलना करने के लिए कुछ भी नहीं है जो पुस्तक में प्रवेश की अनुमति दे सके। इसलिए, मैं थोड़ा समय लेना चाहता हूँ और रहस्योद्घाटन की पुस्तक को खोलने का प्रयास करना चाहता हूँ, जैसा कि हमने अन्य नए नियम की पुस्तकों के साथ किया है, पुस्तक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखते हुए, साहित्यिक प्रकार को देखते हुए और यह कैसे प्रभावित करता है जिस तरह से हम किताब पढ़ते हैं।

अब, सबसे पहले, यह देखना उपयोगी होगा कि ईसाई धर्म के इतिहास में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के साथ कैसा व्यवहार किया गया है। और मूल रूप से, जिस तरह से रहस्योद्घाटन से निपटा गया है या व्यवहार किया गया है उसे दो व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। सबसे पहले, आप अपने नोट्स में यह नोट करेंगे कि चर्च ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के साथ क्या किया है? सबसे पहले, कई लोगों ने इसे अनदेखा करना चुना है।

हालाँकि रहस्योद्घाटन एक ऐसी पुस्तक होने का दावा करता है जिसे खोल दिया गया है, कई लोगों के लिए, यह अभी भी सात मुहरों वाली एक पुस्तक है। और हमें यह बहुत रहस्यमय और बहुत समस्याग्रस्त लगता है। और फिर, क्योंकि हमारे समय में कोई समानताएं या उपमाएँ नहीं हैं, हम निश्चित नहीं हैं कि इसे कैसे पढ़ा जाए।

और यह बहुत भ्रमित करने वाला प्रतीत होता है। और हम इसे देखना शुरू करते हैं, और इसे पढ़ने और इस तक पहुंचने के सभी प्रकार के विभिन्न तरीके हैं। इसलिए, हम इसे दरकिनार करना चाहेंगे और ऐतिहासिक यीशु पर आधारित सुसमाचारों की सुरक्षित जमीन पर पीछे हट जाएंगे, या हम पॉल के पत्रों की ओर पीछे हट जाएंगे, जहां हमें शायद अधिक सीधा संचार मिलेगा, और हम रहस्योद्घाटन को किसी और के लिए छोड़ देंगे या किसी और समय।

यहां तक कि जॉन केल्विन जैसे प्रतिभाशाली धर्मशास्त्री भी थे, जिन्होंने न्यू टेस्टामेंट की प्रत्येक पुस्तक पर टिप्पणियाँ लिखीं, उन्होंने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर एक भी टिप्पणी नहीं लिखी।

और कई अन्य टिप्पणीकारों, टेटर्स के लिए शायद उनके उदाहरण का अनुसरण करना बेहतर होता। लेकिन केल्विन ने भी प्रकाशितवाक्य पर कोई टिप्पणी नहीं लिखी क्योंकि वह निश्चित नहीं था कि इसके साथ क्या करना है।

तो यह एक दृष्टिकोण है, इसे अनदेखा करना और गॉस्पेल या पत्रियों के सुरक्षित आधार पर पीछे हटना। विपरीत चरम यह है कि हम इसके प्रति इतने जुनूनी और मुग्ध हो जाते हैं, कि हम केवल प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर ध्यान केंद्रित करते हैं और यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि यह कैसे पूरा होगा, और हम यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि रहस्योद्घाटन उन घटनाओं से कैसे मेल खाता है हमारे ही दिन में घटित हो रहे हैं। और जब आप कंप्यूटर पर जाते हैं, यदि आप Google रहस्योद्घाटन या सर्वनाश करते हैं, तो आप देखेंगे कि संपूर्ण वेबसाइटें रहस्योद्घाटन की पुस्तक को डिकोड करने और यह पता लगाने की कोशिश करने के लिए समर्पित हैं कि इसके दर्शन और भविष्यवाणियां आज कैसे पूरी हो रही हैं।

और हम रहस्योद्घाटन के प्रकाश में मध्य पूर्व में चल रही घटनाओं के बारे में पढ़ते हैं। और इसलिए सभी प्रकार के मंत्रालय और वेबसाइटें और व्यक्ति अपनी पूरी ऊर्जा और ध्यान प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का पता लगाने में लगाते हैं। वे इसके प्रति आसक्त हो जाते हैं।

लेफ्ट बिहाइंड श्रृंखला पुस्तकों की श्रृंखला का एक अच्छा उदाहरण है। हालाँकि यह काल्पनिक है, फिर भी यह यथार्थवादी रूप से चित्रित करने का प्रयास करता है कि लेखक कैसे सोचते हैं कि रहस्योद्घाटन वास्तव में भविष्य में पूरा होने वाला है। तो रहस्योद्घाटन का पता लगाने की कोशिश करने के लिए ये दो बहुत ही सामान्य दृष्टिकोण हैं।

फिर, इसे नज़रअंदाज़ करना बहुत कठिन है क्योंकि हम नहीं जानते कि इसके साथ क्या करना है, या विपरीत चरम, हम इसके प्रति आसक्त हो जाते हैं और इसे समझने की कोशिश में अपनी सारी ऊर्जा लगा देते हैं, विशेष रूप से इस प्रकाश में कि यह कैसे होता है आधुनिक समय की घटनाओं के साथ फिट बैठता है। उस संबंध में रहस्योद्घाटन एक क्रिस्टल बॉल की तरह हो जाता है जिसे हम यह जानने की कोशिश करते हैं कि भविष्य में क्या होने वाला है। लेकिन मैं आपको सुझाव दूंगा कि रहस्योद्घाटन तक पहुंचने का तरीका उन दोनों चरम सीमाओं से बचना है।

हम इसे अस्वीकार नहीं करना चाहते क्योंकि यह परमेश्वर के वचन का हिस्सा है। रहस्योद्घाटन उस व्यक्ति के लिए आशीर्वाद का वादा करके शुरू होता है जो इसे पढ़ता है, सुनता है और इसे हृदयंगम करता है। इसलिए, क्योंकि यह परमेश्वर का वचन है, हम इसे अस्वीकार नहीं कर सकते।

लेकिन न तो हम इसके प्रति इतने जुनूनी हो सकते हैं कि हम बाइबल के बाकी हिस्सों को नज़रअंदाज़ कर दें या हम इन फैसी पूर्ण व्याख्याओं के साथ सामने आएँ जिन्हें लेखक ने कभी भी इरादा नहीं किया होगा और पाठक कभी भी संभवतः समझ नहीं पाएंगे। इसलिए, मैं सुझाव दूंगा कि शुरुआती बिंदु यह है कि, किसी भी अन्य नए नियम की किताब की तरह, हमें सबसे पहले रहस्योद्घाटन को उसके मूल संदर्भ में वापस रखना होगा। और जैसा हमने पॉल के पत्रों के साथ

किया है, जैसा हमने गॉस्पेल के साथ किया है, जैसा हमने अन्य सामान्य पत्रों के साथ किया है, सबसे पहले यह पूछना आवश्यक है कि इस पुस्तक का अपने मूल ऐतिहासिक संदर्भ में क्या मतलब था? लेखक क्या करने का प्रयास कर रहा था? लेखक क्या संप्रेषित करने का प्रयास कर रहा था? संभवतः पहले पाठकों ने इसे कैसे समझा और समझा होगा? तो हम यही करना चाहते हैं.

यह दिलचस्प है कि जबकि कई लोग ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का पुनर्निर्माण करके, इस तरह से अन्य नए नियम की पुस्तकों को देखने की वकालत करेंगे, यह पूछेंगे कि लेखक का इरादा क्या था, और पाठकों ने इसे कैसे समझा होगा, यह मेरे लिए दिलचस्प है कि हम उस दृष्टिकोण को छोड़ देते हैं जब हम रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर आते हैं। फिर भी मेरी राय में, यहीं इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है। तो, आइए रहस्योद्घाटन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से संबंधित प्रश्नों की एक श्रृंखला पूछकर शुरुआत करें।

ऐसा क्यों लिखा गया? लेखक कौन थे? पाठक कौन थे? वे किस स्थिति का सामना कर रहे थे? प्रकाशितवाक्य की पुस्तक किस संकट या समस्या के कारण उत्पन्न हुई? सबसे पहले, पुस्तक का लेखक और तारीख। जब रहस्योद्घाटन के लेखकत्व की बात आती है, तो कुछ अनिश्चितता होती है। हम जानते हैं कि लेखक का नाम जॉन है।

वह हमें किताब में बताता है। समस्या यह है कि, चर्च के इतिहास और प्रारंभिक ईसाई धर्म के प्रारंभिक वर्षों में, कुछ चर्च पिताओं ने कुछ अलग-अलग जॉनों का उल्लेख किया जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लेखकत्व के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं। और मैं इस बारे में विस्तार से नहीं जाना चाहता कि वे जॉन कौन हैं और हो सकते हैं।

आप अपनी पाठ्यपुस्तक में न्यू टेस्टामेंट का परिचय देते हुए कुछ विकल्पों के बारे में पढ़ सकते हैं। प्राथमिक विकल्प, या सबसे लोकप्रिय विकल्पों में से एक, यह है कि प्रकाशितवाक्य का लेखक चौथे सुसमाचार, जॉन के सुसमाचार, यानी प्रेरित जॉन के समान ही लेखक था। जॉन को प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लेखक के रूप में देखने के लिए कई लोग इस दृष्टिकोण पर कायम हैं, और इसके लिए अच्छे सबूत भी हैं।

लेकिन फिर भी, अन्य संभावनाएँ हैं, पहली सदी के अन्य चर्च नेता, जॉन नाम के कुछ अन्य लोग, जो इस पुस्तक के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं। और दिलचस्प बात, मुख्य बात जो मैं बताना चाहता हूँ वह यह है कि, जो भी मामला हो, यह जॉन जो भी था, नंबर एक, वह चर्चों में अच्छी तरह से जाना जाता था। जब आप प्रकाशितवाक्य का पहला अध्याय पढ़ते हैं, तो वह खुद को ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचानता है जो उनके कष्टों में भागीदार है, और ऐसा प्रतीत होता है कि वह चर्चों को काफी अच्छी तरह से जानता है।

तो, यह जॉन जो भी हो, चाहे वह प्रेरित हो या कोई अन्य प्रसिद्ध जॉन, पहली शताब्दी में एक भविष्यवक्ता, वह चर्चों में अच्छी तरह से जाना जाता था। दूसरा, यह दिलचस्प है, भले ही यह प्रेरित जॉन ही लिख रहा हो, और यह भी हो सकता है कि वह प्रेरितिक अधिकार का दावा नहीं

करता हो। पॉल के पत्रों के विपरीत, जहाँ पॉल लिखते हैं, पॉल, ईश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का एक प्रेरित, लेखक प्रेरितिक अधिकार का दावा नहीं करता है, भले ही वह एक हो।

इसके बजाय, वह पुराने नियम के भविष्यवक्ता के अधिकार का दावा करता है। वह ऐसे व्यक्ति के रूप में लिखते हैं जो पुराने नियम की भविष्यवाणी परंपरा के समापन पर आता है। और बार-बार, वह अपने काम में पुराने नियम के भविष्यसूचक रूपों का उपयोग करता है।

वह एक भविष्यवक्ता के अधिकार के साथ लिखने का दावा करता है। वह एक भविष्यवक्ता के रूप में यशायाह और यहजकेल और पुराने नियम के कुछ महान भविष्यवक्ताओं के समान अनुभव होने का दावा करता है। तो, यह जॉन जो भी है, वह मुख्य रूप से एक ऐसे व्यक्ति के रूप में लिखता है जो भविष्यवाणी परंपरा के चरम पर लिखता है और एक भविष्यवक्ता के अधिकार के साथ लिखता है।

वास्तव में, कभी-कभी इस बात पर बहुत बहस होती है कि क्या नए नियम के लेखकों ने सोचा था कि वे धर्मग्रंथ लिख रहे थे। हमने पहले ही पॉल के कुछ पत्रों को देख लिया है, और चाहे वह सोचता हो कि वह धर्मग्रंथ लिख रहा है या नहीं, उसे कभी-कभी ऐसा लगता है कि वह कुछ ऐसा लिख रहा है जो आधिकारिक है, पुराने नियम के धर्मग्रंथ के बराबर है, जिसे सुना जाना चाहिए और उसका पालन किया जाना चाहिए। और इसके पीछे परमेश्वर की आत्मा का अधिकार है। अन्य पुस्तकों में, ल्यूक की पुस्तक की तरह, जब आप अध्याय 1, 1-4 पढ़ते हैं, तो ल्यूक को यह एहसास नहीं होता है कि वह यीशु के जीवन के बारे में पहली शताब्दी की एक विशिष्ट जीवनी के अलावा कुछ भी लिख रहा है।

लेकिन जॉन, रहस्योद्घाटन की पुस्तक में, मेरी राय में, जॉन को लगता है कि वह कुछ ऐसा लिख रहा है जो पुराने नियम के भविष्यसूचक साहित्य और पुराने नियम के भविष्यसूचक धर्मग्रंथ का अधिकार रखता है। शायद जॉन ने यह नहीं सोचा था कि वह कुछ ऐसा लिख रहा था जो पूरे कैनन को समाप्त कर देगा, या इस बिंदु पर शायद उसे नए टेस्टामेंट कैनन की धारणा नहीं थी जो पुराने टेस्टामेंट के साथ खड़ा होगा, और न ही यह स्पष्ट है कि क्या उसने अपनी पुस्तक के बारे में सोचा था पुराने नियम के सिद्धांत में शामिल किया जाना चाहिए, यह बात नहीं है। लेकिन मुद्दा यह है कि वह ऐसा कुछ लिखने के बारे में सोचता है, और सचेत है, जिसे पुराने नियम के भविष्यसूचक ग्रंथों और पुराने नियम के धर्मग्रंथों के समान अधिकार के साथ लिया जाना चाहिए।

जहां तक लेखन की तारीख का सवाल है, कई प्रस्ताव आए हैं, और एक बार फिर, मैं उन सभी पर विचार नहीं करना चाहता, आप कुछ विकल्पों का पता लगाने के लिए अपनी पाठ्यपुस्तक पढ़ सकते हैं। लेकिन दो सबसे आम तारीखें, उनमें से एक नीरो के शासनकाल के दौरान की है। यदि आप अपनी नोटबुक के बिल्कुल पीछे की ओर मुड़ें, तो आपको एक सूची दिखाई देगी, मुझे लगता है कि आपकी नोटबुक के बिल्कुल पिछले पृष्ठ पर, आपको सम्राटों की एक सूची दिखाई देगी।

यदि आप नीरो का पता लगाते हैं, जिसने विशेष रूप से 60 के दशक के मध्य में शासन किया था, तो कुछ का सुझाव है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक नीरो के समय में लिखी गई थी। नीरो, जैसा

कि हमने सेमेस्टर की शुरुआत में देखा था, नीरो कई बार ईसाइयों के प्रति अपने क्रूर व्यवहार के लिए जाना जाता था। जैसा कि परंपरा है, उन्होंने उन पर रोम को जलाने का आरोप लगाया, और कुछ लोग सुझाव देंगे कि रहस्योद्घाटन में उत्पीड़न के दर्शन और उल्लेख नीरो के शासनकाल के दौरान हुई घटनाओं से मेल खाते हैं।

और इसलिए, कुछ लोग इसे 60 के दशक के मध्य में बताएँगे, और यह संभावना है, नीरो के शासनकाल के दौरान या उसके तुरंत बाद। हालाँकि, संभवतः रहस्योद्घाटन की डेटिंग के लिए सबसे आम दृष्टिकोण इसे पहली शताब्दी के अंत में निर्धारित करना है। पुनः, यदि आप अपने नोट्स में सम्राटों की उस सूची को देखें, तो आप देखेंगे कि डोमिनियन नाम का एक सम्राट पहली शताब्दी के अंत में रोम पर शासन कर रहा था।

पुनः, ईसाई धर्म के आरंभिक दिनों में कुछ आरंभिक चर्च पिताओं ने रहस्योद्घाटन को डोमिनियन के शासनकाल से जोड़ा या जोड़ा, और यह शायद आज विद्वानों के बीच सबसे आम दृष्टिकोण बन गया है, कि रहस्योद्घाटन सम्राट डोमिनियन के शासनकाल के अंत में लिखा गया था। पहली सदी। यदि ऐसा मामला है, तो रहस्योद्घाटन तब लिखे गए नए नियम की सबसे आखिरी किताब रही होगी। हालाँकि, फिर से, यह कैनन के अंत में आता है, इसलिए नहीं कि यह लिखी गई आखिरी किताब थी।

याद रखें, नए नियम को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित नहीं किया गया है, लेकिन अन्य कारण हैं कि यह नए नियम के अंत में क्यों आता है। इसलिए, बहुत अधिक तर्क प्रस्तुत किए बिना, फिर से, अपनी पाठ्यपुस्तक पढ़ें। मैं यह मानने जा रहा हूँ कि प्रकाशितवाक्य पहली शताब्दी के अंत में, लगभग 95-96 ईस्वी में, और सम्राट डोमिनियन के शासनकाल के दौरान लिखा गया था।

अब, जब आप रहस्योद्घाटन की पुस्तक पढ़ते हैं, तो सबसे विशिष्ट बात, वास्तव में, आप उनमें से एक को अपने नोट्स में उल्लिखित पाएँगे, लेकिन मैं रहस्योद्घाटन की पुस्तक की दो विशिष्ट विशेषताओं का उल्लेख करना चाहता हूँ, और वे एक साथ चलते हैं। उनमें से एक, संभवतः रहस्योद्घाटन की सबसे विशिष्ट विशेषता, इसका प्रतीकवाद है। पुस्तक की लगभग हर कविता अजीब, कभी-कभी विचित्र प्रतीकों से भरी हुई है।

आपने एक अध्याय पढ़ा जहाँ जॉन ने टिड्डियों का यह दर्शन देखा, फिर भी उनके सिर मनुष्य के समान, बाल स्त्री के, दांत सिंह के समान हैं, और उनके सिर पर मुकुट हैं, और उनकी पूँछ बिच्छुओं के समान है। मेरा मतलब है, वह किस प्रकार की दृष्टि है? जॉन दुनिया में क्या देख रहा है? और आपके पास ड्रेगन और सांपों से भरी एक किताब है, आपके पास धुएँ और गंधक और आग और गंधक और गड़गड़ाहट से भरी एक किताब है, और सभी प्रकार के, कभी-कभी, सभी प्रकार के अजीब जीव और सभी प्रकार के अजीब प्रतीक हैं जो इसके पन्नों पर हावी हैं। रहस्योद्घाटन की पुस्तक. तो, हम रहस्योद्घाटन के प्रतीकों पर लौटेंगे, लेकिन इससे हमें यह पता चल जाएगा कि जिन चीजों के लिए हमें सतर्क रहने की ज़रूरत है उनमें से एक यह है कि जॉन को ये प्रतीक कहाँ से मिले? वह प्रतीकों में संवाद क्यों करता है? वह क्या करने की कोशिश कर रहा है? दूसरी प्राथमिक विशेषता, उससे संबंधित प्रकाशितवाक्य की एक विशिष्ट विशेषता, पुराने नियम का उपयोग है।

इनमें से अधिकांश प्रतीक, भले ही जॉन कभी-कभी उन पर अपना स्पिन डालता है, और भले ही कभी-कभी वह अपने कुछ प्रतीकों के लिए व्यापक ग्रीको-रोमन दुनिया को आकर्षित कर सकता है, जॉन के बहुत सारे प्रतीक सीधे पुराने नियम से आते हैं। वस्तुतः प्रत्येक पद में किसी न किसी प्रकार का पुराने नियम का संदर्भ है, भले ही जॉन ने इसे कभी उद्धृत नहीं किया है, जैसा कि आप मैथ्यू में पाते हैं, यह यशायाह भविष्यवक्ता द्वारा कही गई बात को पूरा करने के लिए हुआ था, या कभी-कभी पॉल कहेगा, ठीक वैसे ही जैसे यह है लिखा गया था, और फिर वह एक पुराने नियम का पाठ उद्धृत करेगा। आप इसे रहस्योद्घाटन में कभी नहीं पाते हैं।

इसके बजाय, लेखक केवल पुराने नियम की छवियों और भाषा, विशेष रूप से भविष्यसूचक पुस्तकों को अपनी दृष्टि में बुनता है। इसलिए, पुराने नियम की पृष्ठभूमि को समझना और यह समझना महत्वपूर्ण है कि जॉन को अपनी कुछ भाषा कहाँ से मिलती है। अक्सर, जॉन के कुछ प्रतीकों और भाषाओं का अर्थ इस बात पर निर्भर करता है कि उनके पुराने नियम की पृष्ठभूमि में उनका क्या मतलब है, जहाँ जॉन उन्हें प्राप्त करते हैं।

अब, प्रकाशितवाक्य क्यों लिखा गया था? फिर, अक्सर जब हम रहस्योद्घाटन की पुस्तक के बारे में सोचते हैं, तो मुझे डर होता है कि हम अक्सर इसके साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि हम जा रहे थे और अपनी हस्तरेखा पढ़ रहे थे, या टैरो कार्ड रीडिंग कराने जा रहे थे, या यदि हम देख रहे थे एक क्रिस्टल बॉल, प्राथमिक उद्देश्य यह पता लगाना है कि भविष्य में क्या होगा। और हाँ, रहस्योद्घाटन भविष्य के बारे में बात करता है, लेकिन भविष्य की भविष्यवाणी करने के अलावा और भी बहुत कुछ चल रहा है। वास्तव में, मैं सुझाव दूंगा कि यह पुस्तक की एक छोटी सी विशेषता है, या कम से कम रहस्योद्घाटन की पुस्तक की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता नहीं है।

यह मुख्य रूप से भविष्य की भविष्यवाणी और भविष्यवाणी करना नहीं है। तो, यह क्या कर रहा था? सबसे पहले, प्रकाशितवाक्य रोमन प्रभुत्व और शाही या सम्राट पूजा की प्रतिक्रिया थी। रहस्योद्घाटन रोमन प्रभुत्व और सम्राट पूजा की प्रतिक्रिया थी।

जैसा कि हम पहले ही सेमेस्टर की शुरुआत में देख चुके हैं, इस समय के दौरान, रोम प्रमुख विश्व शक्ति था, और यह लगातार बढ़ता रहा और पृथ्वी के व्यापक और व्यापक हिस्से को निगलता रहा। यह उस समय का प्रमुख विश्व शासन था जिसने फारस, असीरिया और बेबीलोन जैसे अन्य विश्व नियमों का स्थान ले लिया। अब रोम आता है, और यह मूल रूप से हर जगह फैल गया है, और इसका प्रभाव बसे हुए विश्व के अधिकांश भाग पर महसूस किया जा सकता है।

आप रोमन शासन से प्रभावित हुए बिना भूमध्यसागरीय क्षेत्र में कहीं भी नहीं जा सकते। इसके अलावा, रोम उन सभी लोगों के लिए शांति, समृद्धि और कल्याण प्रदान करने के लिए जाना जाता था जो इसके प्रभाव में आते थे, और उन सभी के लिए जो इसके प्रति निष्ठा दिखाते थे। हालाँकि, इस समय भी, रोमन सम्राट, कुछ मामलों में, दुनिया के उद्धारकर्ता, जो सभी लोगों की भलाई के लिए जिम्मेदार था, के महान संरक्षक के रूप में उभरा।

इस समय भी, ग्रीको-रोमन दुनिया के अधिकांश शहरों में, उनमें से कई ने सम्राट के सम्मान में मंदिर स्थापित किए थे, और वहां एक जीवंत सम्राट पंथ चल रहा था, जहां समाज के सदस्यों को कभी-कभी आवश्यकता होती थी या कम से कम प्रोत्साहित किया जाता था। सम्राट की पूजा में शामिल होना और संलग्न होना। सम्राट की पूजा अक्सर वाणिज्य और व्यापार से जुड़ी होती थी, और पहली शताब्दी में आपके पास जो भी नौकरी थी वह अक्सर सम्राट की पूजा और सम्राट की पूजा के अवसरों और सम्राट के सम्मान में दावतों और त्योहारों में शामिल होने से जुड़ी होती थी। और इसलिए, सम्राट की पूजा समाज के अधिकांश हिस्से में व्याप्त हो गई थी, और कई ईसाई तब इस तरह के संदर्भ में रह रहे थे, ऐसी स्थिति के बीच जहां उन्हें रोमन साम्राज्य के प्रति निष्ठा दिखाने के लिए मजबूर किया जा सकता था, और यहां तक कि अवसरों और अवसरों में भी शामिल होना पड़ सकता था। सम्राट के प्रति निष्ठा व्यक्त करना, यहाँ तक कि उसकी पूजा करना, जैसा कि हमने इस समय कहा था, संभवतः पहली शताब्दी के अंत में सम्राट डोमिनियन था।

तो, एक तरह से, यह रोमन समाज का अपमान होता कि सम्राट ने आपके लिए जो कुछ भी प्रदान किया था, उसके लिए सम्राट के प्रति आभार व्यक्त नहीं किया। और मेरी राय में, रहस्योद्घाटन उस स्थिति की प्रतिक्रिया है। फिर, पहली सदी के कुछ शहरों में आप जहां भी जाएंगे, वहां मूर्तियों और वास्तुकला और यहां तक कि सम्राट के प्रति आपके प्रति कृतज्ञता के ऋण के शिलालेखों के रूप में दृश्यमान अनुस्मारक दिखाई देंगे।

और फिर, इस समय के सम्राटों को दैवीय माना जाता था या उनके साथ देवताओं जैसा व्यवहार किया जाता था। और इसलिए आप उस समस्या को देखना शुरू कर सकते हैं जो उस स्थिति में रहने वाले कई ईसाइयों के लिए पैदा होगी। क्या मुझे इसका विरोध करना चाहिए और यीशु मसीह की पूजा करनी चाहिए? मेरा मतलब है, यीशु मसीह प्रभु हैं, लेकिन क्या मुझे रोमन शासन और सम्राट की पूजा करने के इन अवसरों का विरोध करना चाहिए, या क्या मैं आगे बढ़ सकता हूँ और एक हानिरहित गतिविधि के रूप में इनमें शामिल हो सकता हूँ, खासकर यदि इसका मतलब है कि मेरी नौकरी खोना या किसी अन्य प्रकार का कष्ट सहना हानि या उत्पीड़न का ?

वह अंतिम शब्द उत्पीड़न है। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि रहस्योद्घाटन मुख्य रूप से उन ईसाइयों को संबोधित करने के लिए था जिन्हें रोमन साम्राज्य के तहत पहली शताब्दी में सताया जा रहा था। और जब आप प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पढ़ते हैं, तो उत्पीड़न एक प्राथमिक विषय प्रतीत होता है।

आप बार-बार पढ़ते हैं कि कैसे यीशु मसीह की गवाही के लिए परमेश्वर के लोगों का सिर काट दिया जाता है, कैसे परमेश्वर के लोग जानवर और रोमन साम्राज्य के हाथों पीड़ित होते हैं। और कुछ ने सुझाव दिया है कि रहस्योद्घाटन मुख्य रूप से आराम की किताब है। इसका उद्देश्य उन ईसाइयों को सांत्वना देना है जो शाही रोम के हाथों उत्पीड़न झेल रहे हैं।

और संभवतः इसमें कुछ सच्चाई है। लेकिन याद रखें, हमने कुछ बातें कही थीं। नंबर एक यह है कि इस बिंदु पर, अधिकांश उत्पीड़न मुख्य रूप से स्थानीय और छिटपुट रहा होगा।

ईसाइयों के साम्राज्य-व्यापी उत्पीड़न को आधिकारिक तौर पर स्वीकृत करने जैसा कुछ भी अभी तक नहीं हुआ था। ईसाइयों पर सम्राट की ओर से कोई आधिकारिक प्रतिशोध नहीं था, जहाँ उन्होंने कस्बों में रोमन सेनाएँ भेजीं और ईसाइयों को सड़कों पर खींच लिया। इस समय ऐसा नहीं हो रहा है।

इसके बजाय, अधिकांश उत्पीड़न रोम से नहीं आता है। यह स्थानीय प्राधिकारियों से आता है जो रोम का पक्ष लेने और रोम के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने के इच्छुक हैं। फिर, रोम के प्रति कृतज्ञता दिखाने और सम्राट की पूजा में शामिल होने के इन विभिन्न अवसरों में शामिल न होना उन्होंने इसे एक अपमान के रूप में देखा होगा।

और ईसाइयों के लिए इसका विरोध करना विभिन्न स्तरों और विभिन्न प्रकार के उत्पीड़न का परिणाम हो सकता है। तो, याद रखने वाली पहली बात यह है कि इस समय होने वाला कोई भी उत्पीड़न, और संभवतः ऐसा हुआ भी होगा, मुख्य रूप से स्थानीय और छिटपुट होगा। दूसरी बात यह है कि, जब आप प्रकाशितवाक्य पढ़ते हैं, तो कम से कम एक व्यक्ति, एंटीपास नाम का एक व्यक्ति, यीशु मसीह की गवाही के लिए मर गया है।

पेर्गमम से एंटीपास। और इसके अलावा, हमें यह नहीं बताया गया कि क्या किसी और को यह बीमारी है, लेकिन हम जानते हैं कि कम से कम एक व्यक्ति को यह बीमारी हुई है। लेकिन फिर, ऐसा लगता है, जॉन के लिए, यह केवल एक संघर्ष की शुरुआत है जो बढ़ सकता है।

लेकिन इस समय, कोई भी उत्पीड़न मुख्य रूप से छिटपुट और स्थानीय है, और कोई आधिकारिक तौर पर स्वीकृत व्यापक उत्पीड़न नहीं चल रहा है। इसके बजाय, जब आप एशिया माइनर के शहरों को देखते हैं, यदि आप एशिया माइनर में जाते हैं जो हमारा आधुनिक तुर्की है, जहाँ प्रकाशितवाक्य के सात शहर स्थित थे, जब आप प्रकाशितवाक्य 2 और 3 पर वापस जाते हैं, तो आप उन शहरों के बारे में पढ़ते हैं। प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में सात शहरों का उल्लेख है, आधुनिक तुर्की, या एशिया माइनर, पश्चिमी एशिया माइनर के विशिष्ट शहर, जिनके लिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को संबोधित किया गया है।

और जब आप इन सात चर्चों को लिखे इन पत्रों को पढ़ते हैं, तो कुछ दिलचस्प बातें सामने आती हैं। सबसे पहले, ये सभी शहर स्पष्ट रूप से शाही रोमन शासन में निहित हैं। ये सभी शहर शाही रोम और सम्राट पूजा और रोमन शासन के केंद्र में स्थित हैं।

इनमें से अधिकांश शहरों में रोमन सम्राट के सम्मान में कम से कम एक मंदिर बनवाया गया था। उनके पास अन्य देवी-देवताओं के सम्मान में अन्य मंदिर भी थे, लेकिन इसके साथ-साथ कुछ सम्राटों को समर्पित मंदिर भी रहे होंगे। हम ध्यान देते हैं, उदाहरण के लिए, इफिसस में, पहला शहर जिसे प्रकाशितवाक्य 2 में संबोधित किया गया है, इफिसस शहर में डोमिनिशियन की पूजा के लिए समर्पित एक मंदिर था, रोमन सम्राट शायद तब शासन कर रहा था जब प्रकाशितवाक्य लिखा गया था।

लेकिन इनमें से अधिकांश शहरों में मंदिर भी थे, जो न केवल देवताओं और अन्य ग्रीको-रोमन देवताओं को बल्कि सम्राट को भी समर्पित थे। तो, इन शहरों से संबंधित होने से आपको ऐसी स्थिति में डाल दिया जाएगा जहां आपको मजबूर किया जाएगा और उन परिस्थितियों में डाल दिया जाएगा जहां आपको निष्ठा प्रदान करना या यहां तक कि उन घटनाओं में भाग लेना आवश्यक लगेगा जो आपको पूजा और निष्ठा प्रदान करने में शामिल कर सकते हैं सम्राट, रोमन सम्राट को, और रोमन विचारधारा और रोमन समाज और रोमन शासन के प्रति अपना समर्थन दिखाना। फिर, इनमें से अधिकांश शहरों में, यहां तक कि आपका व्यापार और वाणिज्य, यहां तक कि आपकी नौकरी भी रोमन विचारधारा और रोमन शासन से लिपटी हुई थी।

तो, इससे ईसाइयों के लिए दुर्दशा पैदा हुई, और दो संभावित प्रतिक्रियाएँ थीं। यदि आप इस समय के दौरान रहने वाले ईसाई हैं तो और भी अधिक, लेकिन दो सामान्य संभावनाएँ या प्रतिक्रियाएँ हो सकती हैं। सबसे पहले, आप विरोध करना चुन सकते हैं क्योंकि आप जानते हैं कि यीशु मसीह दुनिया के सच्चे भगवान और उद्धारकर्ता हैं।

क्योंकि आप जानते हैं, जैसा कि यीशु ने कहा था, आप दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकते। तो, आप जानते हैं कि केवल यीशु ही आपकी पूजा और आपकी आज्ञाकारिता के योग्य है। लेकिन अब आपके पास रोमन सम्राट यह दावा कर रहा है कि वह दुनिया का उद्धारकर्ता है जो अब आपकी आज्ञाकारिता, आपकी निष्ठा और आपकी पूजा के लिए कह रहा है या बुला रहा है, या कम से कम स्थानीय अधिकारी आपको ऐसा करने के लिए मजबूर कर रहे हैं।

अब आप उस स्थिति का सामना कर रहे हैं, और ऐसा करने से इनकार करने से आपके काम, आपके पूरे परिवार, आपकी शारीरिक सुरक्षा पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है। आप कैसे प्रतिक्रिया देंगे? तो, एक संभावना विरोध करने की थी, और इससे विभिन्न प्रकार के उत्पीड़न हो सकते थे और कम से कम एक व्यक्ति, एंटीपास की मृत्यु हो सकती थी। तो यह एक संभावना है।

दूसरा है, और यह मुख्य समस्या प्रतीत होती है जिसे प्रकाशितवाक्य संबोधित कर रहा है, ऐसा प्रतीत होता है कि उत्पीड़न की तुलना में कहीं अधिक गंभीर समस्या यह है कि अधिकांश ईसाई आगे बढ़ने और समझौता करने के लिए प्रलोभित थे। शायद समाज में अपना स्थान बनाए रखने के लिए, या उत्पीड़न सहना न चाहने के लिए, या किसी भी कारण से, कुछ ईसाई रोमन विचारधारा और रोमन शासन के आगे झुकने को तैयार थे। वे सम्राट की पूजा करने के इच्छुक थे।

उन्होंने सोचा कि वे यीशु मसीह के प्रति निष्ठा और पूजा कर सकते हैं और शायद, रोमन साम्राज्य के साथ भी ऐसा करना हानिरहित था। इसलिए, वे इसे दोनों तरीकों से चाहते थे। वे समझौता करने को तैयार होने में अधिक आत्मसंतुष्ट थे।

दिलचस्प बात यह है कि जब आपने प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में चर्चों को सात पत्र पढ़े, तो उनमें से केवल दो चर्च किसी भी प्रकार के उत्पीड़न से गुज़र रहे थे। अन्य पांच, अन्य पांच के साथ मुख्य समस्या उनकी भागीदारी, रोमन शासन और सम्राट पूजा में शामिल होने की उनकी इच्छा, और रोमन साम्राज्य और रोमन शासन के प्रति अपनी निष्ठा देना है। तो मेरे ख्याल से रहस्योद्घाटन में

सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा, इतना अधिक उत्पीड़न नहीं है, यह समझौता और शालीनता है, रोमन शासन और सम्राट की पूजा में झुकना और खरीदना है।

तो, इसके आलोक में, प्रकाशितवाक्य का मुख्य विषय क्या है? मेरी राय में, किसी मुख्य विषय को अलग करना थोड़ा कठिन है। हाँ, उत्पीड़न, परमेश्वर के लोगों का पीड़ित होना, निश्चित रूप से एक विषय है। फिर, आप पीड़ा और उत्पीड़न के विषय को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं जिसे जॉन अपने लोगों की अंतिम नियति के रूप में देखता है यदि वे रोमन शासन का विरोध करते हैं।

लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि प्रकाशितवाक्य का प्राथमिक विषय होने का दावा करने वाले विषयों में से एक यह प्रश्न है कि हमारी पूजा के योग्य कौन है? वास्तव में हमारी पूजा के योग्य कौन है? क्या यह यीशु मसीह है, या यह रोमन साम्राज्य है, या कोई अन्य मनुष्य या मानवीय संस्था है? मेरी राय में, प्रकाशितवाक्य जो कुछ करता है उनमें से एक पाठकों को यह समझाने की कोशिश करना है कि केवल यीशु मसीह ही उनकी पूजा और उनकी निष्ठा और भक्ति के योग्य हैं। कोई अन्य मनुष्य, कोई अन्य मानवीय संस्था या इकाई पूजा के योग्य नहीं है। यह मूर्तिपूजा है, जॉन अपने पाठकों को बताता है।

इसलिए, उनके पास यह दोनों तरीके से नहीं हो सकता। इसलिए, रहस्योद्घाटन ईसाइयों के लिए एक जागृत आह्वान है ताकि वे समझ सकें कि उनके पहली शताब्दी के संदर्भ में क्या चल रहा है। वे उस विशिष्ट पूजा और निष्ठा से समझौता करने के गंभीर खतरे में हैं जिसके केवल भगवान और यीशु मसीह ही हकदार हैं।

और कोई भी अन्य मनुष्य या कोई अन्य मानवीय प्राधिकारी या संस्था इसके योग्य नहीं है। तो, रहस्योद्घाटन को इस प्रश्न का उत्तर देने के रूप में देखा जा सकता है कि हमारी पूजा के योग्य कौन है? इसका उत्तर यह है कि केवल यीशु मसीह और ईश्वर, कोई अन्य मनुष्य या प्राधिकारी या संस्था हमारी परम पूजा और निष्ठा के योग्य नहीं है। ऐसा करना मूर्तिपूजा है।

हालाँकि, एक अन्य बात, रहस्योद्घाटन को भी देखने की जरूरत है, फिर से मैंने पहले ही कहा है कि रहस्योद्घाटन मुख्य रूप से भविष्य की भविष्यवाणी नहीं है, बल्कि इसे रोमन शासन की वास्तविक प्रकृति के अनावरण या अनावरण के रूप में देखा जाना चाहिए। रहस्योद्घाटन की पुस्तक में जॉन मुख्य रूप से क्या कर रहा है, और यह महत्वपूर्ण है, वह जो मुख्य रूप से कर रहा है वह केवल भविष्य की भविष्यवाणी करना और हमें यह बताना नहीं है कि 20वीं या 21वीं सदी या कुछ और में क्या होने वाला है। जॉन मुख्य रूप से अपने पाठकों को रोमन शासन की वास्तविक प्रकृति से परिचित कराने का प्रयास कर रहा है।

यह रोमन साम्राज्य के अहंकार और दिखावे को उजागर करने का प्रयास कर रहा है। दूसरे शब्दों में, इसीलिए हमने कहा कि जॉन मूल रूप से पुराने नियम के भविष्यवक्ता की तरह कार्य कर रहा है। वह पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के अधिकार का दावा करता है।

यदि आप अपने पुराने नियम के सर्वेक्षण पाठ्यक्रम पर वापस जाते हैं, यदि आपको यशायाह और यहजकेल और यिर्मयाह और अन्य पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं में से कुछ याद हैं, तो उन्हें अक्सर मानव और सांसारिक साम्राज्यों की वास्तविक प्रकृति को उजागर करना पड़ता था,

चाहे वह बेबीलोन हो। या मिस्र या फारस। पुराना नियम बार-बार मानव शासकों और मानव साम्राज्यों के दिखावे और अहंकार के असली रंग दिखाने और उजागर करने की कोशिश कर रहा था जो खुद को भगवान के रूप में स्थापित करेंगे, जो भगवान के लोगों पर अत्याचार करेंगे, जो घमंड से खुद को संप्रभु के रूप में स्थापित करेंगे। सभी चीज़ें। और अब, जॉन जो कर रहा है वह सिर्फ भविष्य की भविष्यवाणी नहीं कर रहा है।

वह वही कर रहा है जो उसके पूर्ववर्तियों ने किया था। अब, एक और साम्राज्य उभर रहा है जो कि, पुराने कुछ साम्राज्यों की तरह, जैसे बेबीलोन और फारस और मिस्र और अन्य प्राचीन और दुष्ट और दुष्ट शहर, अब एक और साम्राज्य उभर रहा है जो संप्रभुता का दावा भी कर रहा है। यह भगवान का स्थान लेने का दावा कर रहा है।

यह अहंकारपूर्वक खुद को दुनिया भर में स्थापित करता है। जॉन कहते हैं, यह मूल रूप से एक खून का प्यासा जानवर है जो ईसाइयों को पाने के लिए निकला है और धन पाने के लिए निकला है, चाहे जो भी मामला हो। इसलिए रहस्योद्घाटन मुख्य रूप से रोमन शासन के दिखावा, अहंकार, ऐश्वर्य, धन और भ्रष्ट विचारधारा को उजागर कर रहा है ताकि ईसाइयों को इसकी वास्तविक प्रकृति दिखाई दे ताकि वे इसके आगे झुक न जाएं।

लेकिन इसके बजाय, वे विरोध करने और केवल यीशु मसीह की आज्ञाकारिता और पूजा में रहने के इच्छुक होंगे। मेरी राय में, रहस्योद्घाटन इसी के बारे में है, न कि केवल भविष्य की भविष्यवाणी करने के बारे में। हाँ, यह भविष्य के बारे में बात करता है, और हम देखेंगे कि यह ऐसा क्यों करता है, लेकिन यह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का प्राथमिक लक्ष्य नहीं है।

पहली शताब्दी में रहने वाले ईसाइयों के लिए, इस भयानक साम्राज्य का सामना करना पड़ रहा है जो लगातार बढ़ रहा है, जॉन अब इसकी वास्तविक प्रकृति को उजागर करना चाहता है, इसके दिखावे, इसके अहंकार, खुद को भगवान के रूप में स्थापित करना, इस तथ्य को उजागर करना चाहता है कि यह भगवान के विनाश पर आमादा है लोगों और ईसाइयों का। यह हर उस चीज़ के लिए खड़ा है जो ईश्वर के लिए खड़ा है उसके विपरीत है। इसका मूल्य और विचारधारा ईश्वर-विरोधी है, और जॉन अब इसे उजागर करना चाहता है ताकि उसके ईसाई पाठक इसके आगे न झुकें, बल्कि इसका विरोध करने में सक्षम हों।

रहस्योद्घाटन किस प्रकार की पुस्तक है? जैसा कि हमने पहले कहा, 21वीं सदी के ईसाइयों के रूप में हमारे सामने आने वाली चुनौतियों में से एक यह है कि हमारे पास वास्तव में प्रकाशितवाक्य के करीब कोई साहित्यिक उपमा नहीं है। बाद में, मैं एक या दो उपमाएं सुझाऊंगा जो कुछ हद तक करीब हो सकती हैं, लेकिन वास्तव में हमारे पास कोई करीबी सादृश्य नहीं है। जैसा कि मैंने कहा, आप पत्र पढ़ते और लिखते हैं, आप पढ़ते हैं और आप में से कुछ कहानियाँ और आख्यान लिखते हैं, आप पढ़ते हैं और आप में से कुछ कविताएँ लिखते हैं, लेकिन आखिरी बार आपने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अलावा सर्वनाश कब पढ़ा है? या आखिरी बार आपने सर्वनाश कब लिखा था? आपने शायद नहीं किया होगा।

समस्या का एक हिस्सा यह है कि वास्तव में हमारे पास प्रकाशितवाक्य की तुलना करने के लिए कोई करीबी साहित्यिक सादृश्य नहीं है। हमें यह पता लगाने की कोशिश करनी है कि प्रकाशितवाक्य किस प्रकार की पुस्तक है। रहस्योद्घाटन किस साहित्यिक शैली या साहित्यिक रूप में फिट बैठता है, यह शायद पहली शताब्दी के पाठकों से परिचित था, जिसे सहज रूप से उन्होंने समझ लिया होगा, लेकिन हम ऐसा नहीं करते क्योंकि 2,000 साल बाद हम इस साहित्यिक रूप से अपरिचित हैं और हम 'आप बिल्कुल निश्चित नहीं हैं कि इसे कैसे पढ़ें और इसके साथ क्या करें। जॉन उन जानवरों के इन अजीब दृश्यों को रिकॉर्ड करने में क्या कर रहा था जिनके चारों ओर आँखें थीं, या सात सिर और सात सींग वाले जानवर, या टिड्डियाँ जिनकी पूंछ बिच्छुओं की तरह थीं और सिर इंसानों की तरह थे जिनके बाल एक महिला के और एक शेर के दाँत थे।, वगैरह।? वह सब क्या है, और हम उस तक कैसे पहुँचें और उसे पढ़ना कैसे शुरू करें? दरअसल, रहस्योद्घाटन कम से कम तीन प्रकार के साहित्यिक रूपों का संयोजन है।

पहला वह है जिसे सर्वनाश के रूप में जाना जाता है। दरअसल, सर्वनाश शब्द वह शीर्षक है जिसका उपयोग हम इसके लिए करते हैं। जरूरी नहीं कि जॉन के मन में, या पहली सदी के पाठकों के मन में सर्वनाश का यह विचार हो।

और उन्होंने कहा, ओह हाँ, जॉन हमारे लिए सर्वनाश लिख रहा है। यह एक शब्द है जो हमने इसे दिया है। लेकिन फिर भी, रहस्योद्घाटन लगभग 200 ईसा पूर्व से 200 ईस्वी तक मौजूद लेखों के एक समूह जैसा दिखता है, लगभग उस अवधि में, लेखों का एक समूह जिसे हमने सर्वनाश का नाम दिया है।

और वह यह है कि, यद्यपि सर्वनाश आज हमारे मन में विभिन्न विचारों को जन्म देता है, ऐसा सर्वनाश आम तौर पर दुनिया के विनाशकारी अंत के विचारों को जन्म देता है या ऐसी फिल्मों जिनमें सर्वनाशकारी परिदृश्य होते हैं, बड़े पैमाने पर विनाश होता है, आमतौर पर परमाणु हथियारों या किसी अन्य प्रकार के माध्यम से युद्ध या लड़ाई के माध्यम से सामूहिक विनाश जो एक फिल्म के अंत में हल होता है। जब हम सर्वनाश, विशाल ब्रह्मांडीय पैमाने पर किसी प्रकार का विनाश, एक ब्रह्मांडीय युद्ध या संघर्ष या युद्ध के बारे में सोचते हैं, जिसमें विजेता अंत में विजयी होता है, तो अक्सर हम यही सोचते हैं। लेकिन पहली शताब्दी में, मुझे विश्वास है कि लेखकों, प्रकाशितवाक्य के लेखक और उसके पाठकों ने रहस्योद्घाटन की पहचान लेखों के एक समूह के साथ की होगी जो मूल रूप से इसकी विशेषता है।

सर्वनाश मूल रूप से एक ऐसा कार्य है जो पाठकों की स्थिति में जो चल रहा है उसकी वास्तविक प्रकृति को प्रकट या उजागर करता है। अर्थात्, जब पाठक अपनी दुनिया में देखते हैं, तो वे जो अनुभवजन्य रूप से देखते हैं, जो वे अपनी आँखों से देखते हैं, वह बस वही होता है जो उनके आसपास चल रहा होता है। लेकिन रहस्योद्घाटन, सर्वनाश जो करता है वह यह है कि यह खुलता है, यह उस दुनिया को खोलता है और यह प्रदर्शित करके इसकी वास्तविक प्रकृति को उजागर करता है कि जो दिखता है उससे कहीं अधिक है।

जिस अनुभवजन्य दुनिया को वे देखते हैं, जिसे वे छू सकते हैं, सूँघ सकते हैं और महसूस कर सकते हैं और देख सकते हैं, उसके पीछे एक और वास्तविकता है, एक स्वर्गीय दुनिया है और

एक भविष्य भी है जो किसी तरह से निर्धारित करता है कि वर्तमान में क्या चल रहा है। तो, एक सर्वनाश, सर्वनाश शब्द का अर्थ है अनावरण या उजागर करना, और यही वह करता है। सर्वनाश वास्तविकता को उजागर करता है।

यह दिखाता है कि आप भौतिक रूप से क्या देखते हैं, पहली सदी के पाठक, जिन्हें जॉन संबोधित कर रहे हैं, उन्होंने रोमन साम्राज्य को देखते समय क्या देखा, उन्होंने अनुभवजन्य रूप से क्या देखा और महसूस किया और छुआ, और जिस दुनिया में वे रहते थे वह सब कुछ नहीं था। और वहां पर। उस दुनिया के पीछे एक अलौकिक स्वर्गीय दुनिया और एक भविष्य है जो यह निर्धारित करेगा कि वे अपनी वर्तमान दुनिया को कैसे देखते हैं और उसके साथ कैसे बातचीत करते हैं। यह स्पष्ट करने का एक तरीका है कि, यदि आप किसी नाटक में जाते हैं और आप अपनी सीट पर बैठे हैं और आप एक नाटक देख रहे हैं, तो आप केवल वही देखते हैं जो मंच पर चल रहा है।

आप देखते हैं कि अभिनेता बाहर आ रहे हैं और अपनी भूमिकाएँ निभा रहे हैं, भाषण दे रहे हैं और बातचीत कर रहे हैं। आप केवल वही देखते हैं जो मंच पर चल रहा है। आप जो नहीं देखते वही पर्दे के पीछे चलता रहता है।

यह नाटक का निर्देशक या प्रबंधक है, सभी लोग साज-सामान और वेशभूषा, मेकअप और नाटक को चलाने वाली हर चीज के लिए जिम्मेदार हैं। तुम्हें वह दिखाई नहीं देता। यह सब पर्दे के पीछे, परदे के पीछे है।

लेकिन रहस्योद्घाटन जो करता है वह उस पर्दे को उठाता है ताकि आप देख सकें कि आंखों से देखने के अलावा वास्तविकता में और भी बहुत कुछ है। पहली सदी के पाठकों के लिए, फिर से, वे इस अद्भुत रोमन साम्राज्य को बढ़ते हुए और क्षेत्र को निगलते हुए और पहली सदी में रहने वाले पहली सदी के लोगों के लिए ये सभी लाभ प्रदान करते हुए देखते हैं। वे बस इतना ही देखते हैं।

वे उस दुनिया को देखते हैं जिसमें वे रहते हैं, जिसे वे छू सकते हैं, महसूस कर सकते हैं और सूँघ सकते हैं। लेकिन रहस्योद्घाटन जो करता है वह इतिहास के मंच पर पर्दा उठाता है ताकि वे पर्दे के पीछे देख सकें कि जो दिखता है उससे कहीं अधिक है। पहली सदी के रोमन शासन के पीछे, एक संपूर्ण स्वर्गीय दुनिया है और एक भविष्य भी है।

एक बिल्कुल अलग वास्तविकता है जो अभी भी वास्तविक है लेकिन पहली शताब्दी में जो कुछ घटित होता है उसे प्रभावित करती है। तो, प्रकाशितवाक्य पाठकों को एक झलक देता है। सबसे पहले, यह जॉन को एक झलक देता है।

वह वही है जिसके पास प्रारंभ में दूरदर्शिता है। जॉन के पास एक दृष्टि है जो उसे इतिहास के पर्दे के पीछे स्वर्गीय दुनिया, पारलौकिक वास्तविकता और भविष्य की झलक देती है। और यह उसे वर्तमान को देखने, अपनी दुनिया, एशिया माइनर में पहली शताब्दी की रोमन दुनिया को पूरी तरह से अलग रोशनी में देखने की अनुमति देता है।

और अब इस दृष्टि को, इस सर्वनाश को अपने पाठकों के लिए दर्ज करके, उसके पाठक भी ऐसा कर सकते हैं। अब वे इतिहास के पर्दे के पीछे इस स्वर्गीय दुनिया में, इस वैकल्पिक दुनिया में, भविष्य में इस स्वर्गीय वास्तविकता को देख सकते हैं ताकि उन्हें बेहतर ढंग से समझने और समझने में मदद मिल सके कि वर्तमान में क्या चल रहा है। इसलिए उम्मीद है कि अब वे रोमन शासन को जवाब देने में सक्षम होंगे।

अब वे एशिया माइनर में पहली सदी के रोमन साम्राज्य में पूरी तरह से अलग रोशनी में जीवन जी सकेंगे। तो, रहस्योद्घाटन एक सर्वनाश है। इससे पुनः हमारा तात्पर्य यह है कि यह एक अनावरण है।

यह इतिहास के पर्दे के पीछे के पर्दे को हटा देता है ताकि हम इसके पीछे छिपी वास्तविकता, स्वर्गीय दुनिया और भविष्य को देख सकें। और जिस तरह से जॉन ऐसा करता है, सर्वनाश की दूसरी विशेषता जिसके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं वह यह है कि जॉन ग्राफिक प्रतीकों के माध्यम से संचार करके ऐसा करता है। प्रतीकों में पाठकों की कल्पना को पकड़ने का एक तरीका होता है।

यदि जॉन बस बैठ जाता और किसी कथा या गद्य पैराग्राफ में वर्णन करता, तो रोम वास्तव में कैसा है, लोग इसे समझ सकते थे, लेकिन यह इतना सम्मोहक नहीं होगा जितना कि एक भयानक सात सिर वाले जानवर की इस दृष्टि को संप्रेषित करना जो खून का प्यासा था और परमेश्वर के लोगों को निगलने को निकले हैं। यह कहीं अधिक सम्मोहक है। सर्वनाश के रूप में रहस्योद्घाटन का अर्थ केवल बुद्धि को प्रभावित करना नहीं है, बल्कि कल्पना को प्रभावित करना है, ताकि उन्हें बौद्धिक रूप से भावनात्मक रूप से प्रतिक्रिया करने के लिए प्रेरित किया जा सके।

तो सर्वनाश यही करता है। यह पाठकों को पहली सदी की दुनिया को एक स्वर्गीय दुनिया और उस भविष्य की दृष्टि के माध्यम से एक नई रोशनी में देखने का एक ग्राफिक, सम्मोहक, कल्पनाशील तरीका है जो पहली सदी की दुनिया के पीछे और परे है जिसमें वे रहते हैं। दूसरा, रहस्योद्घाटन भी एक भविष्यवाणी है।

प्रकाशितवाक्य को एक भविष्यवाणी कहने से हमारा तात्पर्य, फिर से, प्राथमिक रूप से यह नहीं है कि यह भविष्य की भविष्यवाणी करता है, बल्कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की तरह, जिन्होंने अपने समय के साम्राज्यों और अधर्मी प्रणालियों की आलोचना की, लेकिन यह भी कि जो भगवान के लोगों को आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी देते हैं यदि वे हार मान लेते हैं उसके लिए, रहस्योद्घाटन वही काम करता है। एक भविष्यवाणी के रूप में, यह मुख्य रूप से एक भविष्यवाणी शब्द है। यह लोगों के लिए प्रोत्साहन और चेतावनी का शब्द है।

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की तरह, यह दुनिया की वास्तविक प्रकृति को उजागर करता है। यह दुष्ट विश्व व्यवस्था के दिवालियेपन को उजागर करता है। यह किसी भी राष्ट्र या व्यक्ति के दिखावे और अहंकार को उजागर करता है जो खुद को भगवान के रूप में स्थापित करता है और भगवान के राज्य और उसके लोगों का विरोध करता है।

और एक भविष्यवाणी के रूप में, प्रकाशितवाक्य ऐसा करता है। अंततः, रहस्योद्घाटन भी एक पत्र है। एक पत्र के रूप में, प्रकाशितवाक्य ऐसी जानकारी संप्रेषित कर रहा है जिसे पहली सदी के पाठकों ने समझा होगा और जॉन ने इसका इरादा किया होगा।

जब आप प्रकाशितवाक्य को ध्यान से पढ़ते हैं, और इसे अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है, जब आप प्रकाशितवाक्य को ध्यान से पढ़ते हैं, तो यह पॉल के पत्रों में से एक की तरह ही शुरू और समाप्त होता है। यह भी संभव है कि पॉल के अधिकार के कारण, एशिया माइनर में चर्चों को लिखे गए अन्य पत्रों से, यह संभव है कि जॉन ने उस संदर्भ में पॉल के पत्रों के महत्व के कारण जानबूझकर पत्र प्रारूप का पालन किया हो। लेकिन जो भी मामला हो, जॉन की किताब पहली सदी के पत्र की तरह ही शुरू और खत्म होती है।

तो, अध्याय 1 के श्लोक 4 पर ध्यान दें, जॉन एशिया में सात चर्चों के लिए, जो है और जो था और जो आने वाला है उसकी ओर से आपको अनुग्रह और शांति। तो, जॉन बिल्कुल वैसे ही शुरू होता है, उसकी किताब बिल्कुल एक पत्र की तरह शुरू होती है और एक पत्र की तरह ही समाप्त भी होती है। तो, इसका महत्व, फिर से, यह है कि जॉन उसी तरह लिख रहा है जैसे पॉल ने एक विशिष्ट समस्या को संबोधित करने के लिए लिखा था।

जॉन भी यही कर रहा है। फिर, यह 20वीं और 21वीं सदी के ईसाइयों के लिए कोई भविष्यवाणी नहीं है। यह मुख्य रूप से शाही शासन और रोमन शासन के संदर्भ में रहने वाले पहली सदी के ईसाइयों के लिए लिखी गई पुस्तक है।

और एक पत्र के रूप में, जैसे पॉल ने अपने चर्चों में विभिन्न समस्याओं को संबोधित किया था, अब जॉन एक पत्र के रूप का उपयोग करता है। वह इस दृष्टिकोण को लेता है, इसे लिखता है, और पहली शताब्दी में रहने वाले विशिष्ट व्यक्तियों की विशिष्ट आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए इसे एक पत्र के रूप में लिखता है। इसलिए मैं कहता हूँ कि रहस्योद्घाटन की व्याख्या करते समय सबसे महत्वपूर्ण चीजों में से एक वही है जो हम पॉल के पत्रों के साथ करते हैं, पृष्ठभूमि को फिर से बनाने का प्रयास करना है, क्या हो रहा था, क्या हो रहा था, कौन सी समस्या या मुद्दा जॉन की सबसे अधिक संभावना है संबोधन।

और हमने वह कर दिखाया है। हमने पहली सदी के एशिया माइनर में चर्चों की स्थिति और शाही रोम के संदर्भ, सम्राट पूजा की समस्या, उत्पीड़न के संभावित खतरे और रोमन शासन के साथ समझौते को देखा है। हमने रहस्योद्घाटन को समझने के संदर्भ के रूप में उस सब को देखा है।

और, फिर, ऐसा करने की आवश्यकता इस समझ से समर्थित है कि रहस्योद्घाटन न केवल एक सर्वनाश और भविष्यवाणी है, बल्कि यह एक पत्र भी है। अब, प्रकाशितवाक्य की व्याख्या के लिए इसका क्या अर्थ है? ऐसी बहुत सी बातें हैं जो हम कह सकते हैं, लेकिन मैं केवल पाँच बातों पर प्रकाश डालना चाहता हूँ। सबसे पहले, आप देखेंगे कि आपके नोट्स में केवल चार हैं, लेकिन मैं पाँचवाँ जोड़ना चाहता हूँ।

सबसे पहले, रहस्योद्घाटन जिस प्रकार का साहित्य है और जिस पृष्ठभूमि के बारे में हमने अभी बात की है, उसे देखते हुए रहस्योद्घाटन की व्याख्या प्रतीकात्मक रूप से की जानी चाहिए न कि शाब्दिक रूप से। मेरा पालन-पोषण एक चर्च के संदर्भ में हुआ था जिसमें कहा गया था, जब तक कि प्रतीकात्मक रूप से इसकी व्याख्या करने का वास्तव में कोई अच्छा कारण न हो, आपको रहस्योद्घाटन की बहुत शाब्दिक व्याख्या करने की आवश्यकता है। हालाँकि, मुझे विश्वास है कि मामला बिल्कुल विपरीत है।

रहस्योद्घाटन जिस तरह का साहित्य है, उसे देखते हुए, याद रखें, यह एक सर्वनाश है। यह प्रतीकात्मक भाषा में संचार करता है। यह वर्णन करता है, शायद, प्रतीकों के कारणों में से एक यह है कि यह एक पारलौकिक, स्वर्गीय वास्तविकता का वर्णन करता है, कुछ ऐसा जो पाठकों की अनुभवजन्य धारणा के पीछे निहित है।

शायद यही कारण है कि जॉन इस पारलौकिक, स्वर्गीय वास्तविकता और भविष्य की दृष्टि को संप्रेषित करने के लिए इतना प्रतीकवाद का उपयोग करता है जो उसके पाठकों के अनुभव से परे है। इसलिए, वह इसे संप्रेषित करने के लिए प्रतीकों का उपयोग करता है। लेकिन इसका मतलब यह है कि जब हम प्रकाशितवाक्य की व्याख्या करते हैं, तो हमें इसे प्रतीकात्मक रूप से व्याख्या करने की आवश्यकता होती है।

हमें यह समझने की जरूरत है कि जॉन अपनी पहली सदी की दुनिया या भविष्य का वर्णन शाब्दिक भाषा में नहीं कर रहा है। वह इसका प्रतीकात्मक वर्णन कर रहे हैं। इसलिए, रहस्योद्घाटन की व्याख्या करते समय, हमें पूछना होगा कि इन प्रतीकों के अर्थ क्या हैं? ये प्रतीक क्या संदेश देते और संप्रेषित करते हैं? वस्तुतः नहीं, लेकिन प्रतीकात्मक मूल्य क्या है? कठिनाई यह पता लगाने की है कि वे क्या संदर्भित कर रहे हैं।

हम संभवतः कुछ उदाहरण देखेंगे जहां हम उनके संदर्भ के बारे में निश्चित या थोड़ा अधिक आश्वस्त हो सकते हैं। लेकिन पहला सवाल जो हमें पूछना चाहिए वह यह है कि इन प्रतीकों का क्या मतलब है? वे क्या संदेश देना चाह रहे हैं? सात सिर वाले जानवर की यह तस्वीर क्या बताती है? या बिच्छू की पूँछ, इंसान का सिर, शेर जैसे दाँत वगैरह वगैरह वाली टिड्डी की तस्वीर से क्या पता चलता है? उस प्रकार की छवि क्या अर्थ उत्पन्न करती है? इसलिए सबसे पहले, हमें यह समझने की जरूरत है कि प्रकाशितवाक्य प्रतीकात्मक है, शाब्दिक नहीं। दूसरा, कोई भी व्याख्या जो जॉन का इरादा नहीं हो सकती थी और उसके पाठक नहीं समझ सकते थे वह संभवतः संदिग्ध है।

फिर से, मुझे लगता है कि हमें अक्सर यह धारणा होती है कि जॉन ने रहस्योद्घाटन की यह पुस्तक लिखी है और उसके पाठक जो कुछ भी लिखा है उससे पूरी तरह से चकित हो गए होंगे। लेकिन अब 20वीं और 21वीं सदी और उससे भी अधिक समय में, यदि ईसा मसीह शीघ्र वापस नहीं आते हैं, तो अचानक हमारे पास कुंजी है या हमारे पास अधिक समझ है कि जॉन क्या कह रहा था। यह ऐसा है मानो एक बहुत लोकप्रिय रहस्योद्घाटन शिक्षक की भाषा को दोहराना, रहस्योद्घाटन से ग्रस्त उन व्यक्तियों में से एक, उसकी भाषा को दोहराना, उन्होंने कहा कि यह ऐसा है जैसे जॉन को टाइम मशीन में 21वीं सदी में ले जाया गया था और उसने इन सभी घटनाओं

को देखा और फिर वह वापस जाता है और अपने पाठकों को उनका वर्णन करने का प्रयास करता है।

लेकिन फिर, अगर ऐसा मामला है, तो रहस्योद्घाटन को कम से कम या इससे भी बदतर पूरी तरह से गलत समझा गया होगा, अगर यह केवल 20वीं और 21वीं सदी की घटनाओं के बारे में होता, तो पहली सदी में पाठक जो समझ सकते थे, उसकी सीमा से पूरी तरह बाहर हो गया होता। . लेकिन मैं फिर से आश्चर्य हूँ कि रहस्योद्घाटन, इसके बजाय रहस्योद्घाटन था, क्योंकि यह एक पत्र के रूप में था, रहस्योद्घाटन का उद्देश्य पहली शताब्दी के पाठकों से सीधे संवाद करना था। रहस्योद्घाटन एक संदेश संप्रेषित कर रहा था जिसे वे समझ सकते थे।

रहस्योद्घाटन कुछ ऐसा संचार कर रहा था जो संकट और रोमन शासन के तहत जीवन जीने की कोशिश की उनकी स्थिति को पूरा करेगा। रहस्योद्घाटन को उनसे कुछ संवाद करना होगा। इसलिए, मैं आश्चर्य हूँ कि कोई भी व्याख्या जिसे जॉन समझ नहीं सका या उसका इरादा नहीं था और उसके पाठक नहीं समझ सके, वह संदिग्ध होनी चाहिए।

कोई भी व्याख्या कुछ ऐसी होनी चाहिए जो पाठकों और लेखक के पहली सदी के संदर्भ से मेल खाती हो। तीसरा, आपके नोट्स में अक्षर सी, पेड़ों के लिए जंगल को न भूलें। दूसरे शब्दों में, सभी छोटे-छोटे विवरणों और प्रतीकों को जानने में इतना व्यस्त न हो जाएं कि आप प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के मुख्य संदेश और समग्र फोकस और विभिन्न अध्यायों और दर्शन के विभिन्न हिस्सों को भूल जाएं।

फिर, कभी-कभी हमें रहस्योद्घाटन को अधिक समग्र रूप से पढ़ने की ज़रूरत होती है, संपूर्ण दृष्टि को हम पर प्रभाव डालने देना चाहिए, और यह पता लगाने में बहुत अधिक व्यस्त नहीं होना चाहिए कि प्रत्येक विवरण का क्या अर्थ है और प्रत्येक विवरण क्या संदर्भित करता है। चौथा, मुख्य उद्देश्य को न चूकें। फिर, रहस्योद्घाटन मुख्य रूप से भविष्य के बारे में नहीं है।

यह मुख्यतः भविष्य की भविष्यवाणी नहीं है। यह बुतपरस्त साम्राज्य के बीच में पवित्र जीवन जीने के लिए भगवान के लोगों के लिए एक उपदेश है। अंत में, विनम्रता है।

रहस्योद्घाटन की पुस्तक को पढ़ने के लिए विनम्रता की एक अच्छी खुराक एक शर्त है। प्रकाशितवाक्य की हमारी व्याख्याओं से चिपके रहने वाले अभिमानी और अति आत्मविश्वासी लोगों के लिए प्रकाशितवाक्य में कोई जगह नहीं है। हां, मुझे लगता है कि पुस्तक का मुख्य संदेश और मुख्य फोकस और कार्य काफी स्पष्ट हैं, लेकिन जब कुछ विवरणों की बात आती है, जैसे कि प्रकाशितवाक्य अध्याय 20 से आप सहस्राब्दी के बारे में क्या दृष्टिकोण रखते हैं, तो हम उसके बारे में बात करेंगे। मार्ग बाद में।

जब इसकी बात आती है, तो हमें अपनी व्याख्याओं को उचित स्तर की विनम्रता के साथ रखना होगा। हां, हम निश्चित हो सकते हैं कि यीशु मसीह वापस आएंगे और अपना राज्य स्थापित करेंगे, दुष्टता का न्याय करेंगे और अपने लोगों के लिए आशीर्वाद और मुक्ति लाएंगे। हम इसके बारे में निश्चित हो सकते हैं, और हम इसमें हेराफेरी नहीं कर सकते।

लेकिन यह कैसे होता है और इसके आसपास के सभी विवरण और हम रहस्योद्घाटन में विभिन्न विवरणों को कैसे समझते हैं, हां, हमें उनका पता लगाने और उनसे कुशती लड़ने और अपनी स्थिति पर बने रहने की जरूरत है, लेकिन विनम्रता के साथ ऐसा करें। जब आप चर्च के इतिहास को देखते हैं, तो रहस्योद्घाटन के विभिन्न तरीकों और कुछ गलतफहमियों को देखते हुए, मुझे लगता है कि जब हम रहस्योद्घाटन जैसी पुस्तक के पास जाते हैं तो यह काफी हद तक विनम्रता की आवश्यकता की ओर इशारा करता है। अब, इस कक्षा को समाप्त करने से पहले बात करने के लिए एक आखिरी बात, बात करने या संबोधित करने के लिए एक आखिरी बात यह है कि पूरे चर्च के इतिहास में प्रकाशितवाक्य को कैसे पढ़ा गया है। अब, मैं इस बारे में बहुत सी बातें कह सकता हूं।

मैं चार व्यापक दृष्टिकोणों पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूं जो मुख्य रूप से इस बात से संबंधित हैं कि हम रहस्योद्घाटन को अस्थायी रूप से कैसे समझते हैं, जहां तक घटनाएं कब होंगी या कब घटी होंगी। लेकिन रहस्योद्घाटन की व्याख्या करने के कई तरीके हैं। रहस्योद्घाटन की व्याख्या केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से करना, इसे कला के साहित्यिक कार्य और इसके साहित्यिक कार्य के रूप में देखना, पात्र कैसे काम करते हैं, और इस बात में भी दिलचस्पी नहीं लेना कि ये चीजें वास्तव में पूरी होंगी या नहीं, आम बात है। बस इसे साहित्य के रूप में पढ़ने के लिए।

प्रकाशितवाक्य को अलग-अलग वैचारिक दृष्टिकोण से पढ़ना आम बात है, इसे अफ्रीकी अमेरिकियों के कुछ संघर्षों के बारे में बात करने के रूप में देखना, या एक टिप्पणी है जो दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की घटनाओं के प्रकाश में रहस्योद्घाटन को पढ़ती है, और नारीवादी पाठ भी हैं रहस्योद्घाटन, रहस्योद्घाटन को पढ़ने का प्रयास करता है कि यह विभिन्न मुद्दों या विभिन्न वैचारिक मुद्दों और दृष्टिकोणों से कैसे संबंधित है। लेकिन मैं विशेष रूप से चार पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूं, खासकर जब आप सोचते हैं कि मुख्य रूप से इंजील ईसाइयों ने पुस्तक के साथ कैसे संघर्ष किया है और उन्होंने इसके साथ क्या किया है, और अस्थायी रूप से उन्होंने प्रकाशितवाक्य को कैसे पढ़ा है। सबसे पहले, आप अपने नोट्स में एक दृष्टिकोण चुनें के अंतर्गत नोट करेंगे, ये चार मुख्य दृष्टिकोण हैं।

सबसे पहले, जिसे रहस्योद्घाटन के लिए प्रीटेरिस्ट दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है। प्रीटेरिस्ट दृष्टिकोण एक ऐसा दृष्टिकोण है जो कहता है कि सभी रहस्योद्घाटन मूल रूप से पहली शताब्दी में पूरे हुए थे। दूसरे शब्दों में, प्रकाशितवाक्य केवल पहली सदी के ईसाइयों और रोमन साम्राज्य में पहली सदी के चर्चों पर एक टिप्पणी है।

उनमें से कुछ कह सकते हैं कि रहस्योद्घाटन, सहस्राब्दी के अंतिम दो या तीन अध्याय और नया स्वर्ग और नई पृथ्वी, कुछ कहेंगे कि यह भविष्य है, लेकिन अन्य कहेंगे, नहीं, यह अभी भी मौजूद है। सहस्राब्दी और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की दृष्टि वर्तमान में भगवान के लोगों के जीवन का वर्णन करने का एक अत्यधिक प्रतीकात्मक तरीका है। इसलिए, प्रीटेरिस्ट दृष्टिकोण यह कहेगा कि प्रकाशितवाक्य का अधिकांश या वस्तुतः पूरा भाग पहली शताब्दी की अवधि में पूरा हुआ था।

अब, बाइबल की किसी भी अन्य पुस्तक की तरह, इसे अभी भी हम पर लागू किया जा सकता है, लेकिन हमें रहस्योद्घाटन को एक भविष्यवाणी के रूप में देखने की ज़रूरत नहीं है जो अभी भी पूरी होनी बाकी है। मूलतः, प्रकाशितवाक्य पहली सदी की घटनाओं पर एक टिप्पणी मात्र था, और बस इतना ही। उससे आगे देखने की कोई ज़रूरत नहीं है।

दूसरा वह है जिसे ऐतिहासिक दृष्टिकोण के नाम से जाना जाता है। रहस्योद्घाटन का ऐतिहासिक दृष्टिकोण मूल रूप से कहता है कि रहस्योद्घाटन पहले से लिखा गया इतिहास है। जॉन चर्च के संपूर्ण इतिहास की भविष्यवाणी कर रहा था, और इसलिए जो लोग रहस्योद्घाटन को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से देखते हैं, उन्होंने सोचा कि आप प्रकाशितवाक्य पढ़ सकते हैं और पहली शताब्दी से लेकर तीसरी शताब्दी तक चर्च के इतिहास में विभिन्न घटनाओं के साथ रहस्योद्घाटन को क्रमिक रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं।, फिर मूल रूप से सुधार काल में, और फिर 19वीं और 20वीं शताब्दी में हमारे वर्तमान समय में।

इसलिए, रहस्योद्घाटन को एक प्रकार की भविष्यवाणी के रूप में देखा जा सकता है, या फिर, पहले से लिखे गए चर्च के इतिहास के रूप में। उस दृष्टिकोण के साथ समस्या यह है कि, जैसे-जैसे इतिहास आगे बढ़ता रहता है, उसे हमेशा संशोधित करना पड़ता है। इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि ऐसे बहुत से ईसाई नहीं हैं जो अब ऐतिहासिक दृष्टिकोण को अपनाए हुए हैं, क्योंकि, फिर से, इसे कई बार संशोधित करना पड़ा है क्योंकि इतिहास आगे बढ़ता रहता है और अन्य महत्वपूर्ण घटनाएं घटती रहती हैं।

तीसरे दृष्टिकोण को आदर्शवादी दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है। रहस्योद्घाटन के लिए आदर्शवादी दृष्टिकोण मूल रूप से कहता है कि रहस्योद्घाटन केवल भगवान और बुराई के बीच लड़ाई का एक प्रतीकात्मक चित्रण है। यह किसी विशिष्ट समय का उल्लेख नहीं करता।

यह बस एक सामान्य, आदर्श, प्रतीकात्मक चित्रण है। प्रतीक उत्कृष्ट हैं। वे किसी भी विशिष्ट ऐतिहासिक स्थिति से परे हैं।

तो, वे केवल सामान्य, आदर्श प्रतीक हैं। बस एक सामान्य तस्वीर, अच्छाई और बुराई के बीच लड़ाई का प्रतीकात्मक चित्रण। अब, इसके अलग-अलग अनुप्रयोग हो सकते हैं।

जॉन और उसके पाठकों के लिए, यह पहली शताब्दी पर लागू होता है। लेकिन यह किसी भी सदी और किसी भी उपयुक्त स्थिति पर लागू हो सकता है। क्योंकि, फिर, यह एक तरह का सामान्य प्रतीक, प्रतीकात्मक चित्रण है।

और, फिर से, जॉन के लिए, यह पहली सदी में क्रियान्वित किया जा रहा था। लेकिन यह संभवतः तब तक कार्यान्वित होता रहेगा जब तक मसीह नए आकाश और नई पृथ्वी की स्थापना करने और अपना राज्य स्थापित करने के लिए वापस नहीं आता। तो यह आदर्शवादी दृष्टिकोण है, भगवान और बुराई के बीच लड़ाई का एक सामान्य, प्रतीकात्मक, आदर्श चित्रण है।

अंतिम दृष्टिकोण को भविष्यवादी दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है। और ये सभी दृष्टिकोण हैं... मैं ऐसा नहीं कहना चाहता कि ये अखंड हैं और इनमें से किसी एक श्रेणी में आने वाला हर व्यक्ति समान है। इनमें विभिन्न क्रमपरिवर्तन और कुछ विविधताएँ हैं।

और यह निश्चित रूप से भविष्यवादी दृष्टिकोण के बारे में सच है। लेकिन भविष्यवादी दृष्टिकोण, जैसा कि नाम से पता चलता है, मूल रूप से कहता है कि रहस्योद्घाटन मुख्य रूप से भविष्य की भविष्यवाणी या भविष्यवाणी है। दूसरे शब्दों में, प्रकाशितवाक्य में दर्शन अभी तक पूरे नहीं हुए हैं।

वे मुख्य रूप से उन घटनाओं की भविष्यवाणी कर रहे हैं जो यीशु मसीह के वापस आने पर घटित होंगी। इसलिए, यदि मैं पहले से ही लेकिन अभी तक तनाव न होने का फिर से उपयोग कर सकता हूँ, तो प्रीटेरिस्ट दृष्टिकोण पहले से ही ध्यान केंद्रित करेगा और कहेगा कि रहस्योद्घाटन वर्णन करता है कि पहली शताब्दी में क्या हो चुका है। भविष्यवादी दृष्टिकोण कहेगा, नहीं, रहस्योद्घाटन अभी नहीं के बारे में है।

फिर, कुछ भविष्यवादी सोचते हैं कि प्रकाशितवाक्य के कुछ हिस्से पहली शताब्दी में ही पूरे हो रहे थे, लेकिन वे कहेंगे कि अंततः रहस्योद्घाटन के दर्शन भविष्य में यीशु मसीह के वापस आने पर पूरे होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन ऐसे कई तरीके हैं जिनसे वे ऐसा होते हुए देखते हैं, लेकिन मुख्य रूप से भविष्यवादी दृष्टिकोण यही है। अब, आप पूछ सकते हैं, अच्छा, कौन सा दृष्टिकोण सही है? क्या हमें चुनना होगा? खैर, मैं आपको सुझाव दूंगा कि शायद सबसे अच्छा तरीका इनमें से दो या तीन का संयोजन है।

क्योंकि हम पहले ही देख चुके हैं कि भूतपूर्व दृष्टिकोण में कुछ वैधता है कि जॉन मुख्य रूप से रोमन शासन की वास्तविक प्रकृति को उजागर करने की कोशिश कर रहे हैं ताकि पाठकों को इसके आगे झुकना न पड़े। तो निश्चित रूप से जॉन की पुस्तक में मुख्य रूप से पहली शताब्दी का जिक्र करने वाला एक तत्व है। और मैं मानता हूँ कि मुख्य रूप से यही चल रहा है।

लेकिन निश्चित रूप से, निश्चित रूप से, रहस्योद्घाटन में एक मजबूत भविष्य का तत्व है। याद रखें, यह भविष्य के आलोक में वर्तमान को समझने का प्रयास करता है। इसलिए, रहस्योद्घाटन के दर्शन अक्सर आपको प्रेरित करते हैं और आपको भविष्य की पूर्ति और इतिहास के भविष्य के समापन की ओर धकेलते हैं, बिना आपको यह बताए कि चीजें कैसे होने वाली हैं।

यह भविष्य की रोशनी में समझने के लिए वर्तमान को निरंतर खोलता रहता है। इसलिए जॉन भविष्य के बारे में बात करता है जब मसीह वापस आता है और अपना राज्य और एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी स्थापित करता है, लेकिन वह अंततः पाठकों को उनके वर्तमान को समझने में मदद करने के लिए है। आदर्शवादी दृष्टिकोण में निश्चित रूप से सच्चाई है, कि जॉन जिन कुछ प्रतीकों का उपयोग करता है उनमें से कुछ पहले से ही उसके अर्थ के साथ आते हैं।

उनके द्वारा उपयोग किए गए बहुत सारे प्रतीक पहले से ही पुराने नियम में विभिन्न साम्राज्यों, विभिन्न व्यक्तियों और विभिन्न घटनाओं का उल्लेख करते हैं। इसलिए, जॉन उन प्रतीकों का उपयोग कर रहा है, जो अपने आप में, पहली सदी से आगे निकलने की क्षमता रखते हैं, जो पहली

सदी के रोम के अलावा अन्य समय और स्थानों में भी आवेदन पा सकते हैं, और हमें पुस्तक को लागू करने की अनुमति दे सकते हैं। इसलिए, मेरी राय में, संभवतः उनमें से दो या तीन दृष्टिकोणों का संयोजन इस बात के लिए सबसे अधिक न्याय करता है कि रहस्योद्घाटन किस प्रकार का साहित्य है और जॉन किस प्रकार की पुस्तक लिख रहा है।

अब, इसे खत्म करने के लिए यह एक अच्छी जगह है। अगली कक्षा अवधि में, मैं रहस्योद्घाटन के एक संभावित साहित्यिक सादृश्य पर चर्चा करना चाहता हूँ जो हमें इसे समझने में मदद कर सकता है, और फिर हम पृष्ठभूमि की हमारी चर्चा के प्रकाश में रहस्योद्घाटन के कई खंडों को देखना शुरू करेंगे।

यह न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं, व्याख्यान 36, रहस्योद्घाटन पर उनका भ्रमण, सत्र संख्या एक।